विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2558, माघ पूर्णिमा, 3 फरवरी, 2015 वर्ष 44 अंक 8

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना।
पूजा च पूजनेय्यानं, एतं मंगलमुत्तमं॥
मंगल सुत्त॥ १॥

मूर्खों की संगति से बचना, ज्ञानियों की संगति करना और पूजनीय गुरुजनों का पूजन-वंदन करना, ये उत्तम मंगल हैं!

कृतज्ञ हैं!

परम आदरणीय गुरुदेव!

आप का मंगलमय सान्निध्य आज भी महसूस होते रहता है। धर्म का सान्निध्य है तो आप का सान्निध्य है ही। धर्म का सान्निध्य बना रहे ताकि आपका मंगलमय सान्निध्य बना रहे। यही शिव-संकल्प है।

कितना मंगलमय है आप का सान्निध्य! धर्म का सान्निध्य! जब-जब धर्म-सान्निध्य होता है तब-तब आप की असीम करुणा का स्मरण हो आता है और मन कृतज्ञता व रोमांच-पुलक से भर उठता है।

मन कृतज्ञता से भर उठता है उन भगवान सम्यक संबुद्ध शाक्यमुनि गौतम के प्रति, जिन्होंने असंख्य जन्मों तक साधनामय जीवन जीते हुए दसों पुण्य-पारमिताओं को परिपूर्ण किया जिससे कि न केवल अपनी स्वस्ति-मुक्ति साध सके, बल्कि अनेकों की स्वस्ति-मुक्ति का कारण बने। ऐसी कल्याणकारी विद्या खोज निकाली जिसे कि जीवन भर करुणचित्त से मुक्तहस्त बांटते रहे, जिससे अगणित लोगों का मंगल सधा।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है उन जीवन्मुक्त अरहंतों के प्रति जिन्होंने कि यह कल्याणकारी विद्या भगवान से प्राप्त कर *"चरथ, भिक्खवे, चारिकं बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानु-कम्पाय"* के मंगल आदेश को शिरोधार्य कर गांव-गांव, नगर-नगर, जनपद-जनपद इस मुक्तिदायिनी विद्या को बांटने में अपना जीवन लगा दिया।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है उन सभी सत्पुरुषों के प्रति जिन्होंने कि इस पावन धर्म-गंगा को अनेक पीढ़ियों तक प्रवहमान रखा।

कृतज्ञता से मन भर उठता है उन अर्हत सोण और उत्तर के प्रति जो कि विदेश-यात्रा के सभी संकटों को झेलते हुए भगीरथ की तरह इस धर्मगंगा को स्वर्णभूमि ले गये और अगणित प्यासों की प्यास बुझायी।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है उन परंपरागत धर्म-आचार्यों के प्रति जिन्होंने कि ब्रह्मदेश में गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा इस विद्या को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने शुद्ध रूप में कायम रखा। इसमें शब्दों का, रंग-रूप का, आकृति, कल्पनाओं आदि का सम्मिश्रण नहीं होने दिया। जो पथ स्थूल भासमान सत्य का भेदन करता हुआ सूक्ष्मतम परम सत्य की ओर ले जाने वाला राजपथ है, उसे एक स्थूल भासमान सत्य से दूसरे स्थूल भासमान सत्य की ओर ले जाने वाली अंधी गली नहीं बनाया। शुद्ध रूप में रखा तो ही हमें शुद्ध रूप में यह विद्या प्राप्त हुई।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है इस पुनीत आचार्य-परंपरा के पिछली सदी के जाज्वल्यमान नक्षत्र लैडी सयाडो के प्रति और सद्गृहस्थ आचार्य सयातैजी के प्रति जिन्होंने कि इस उत्तरदायित्व को कितने आदर्शरूप से निभाया।

और कृतज्ञता से मन भर उठता है, गुरुदेव! आपके प्रति, जो इतने करुणचित्त से इस अनमोल धर्मरत्न का दान दिया। यदि यह धर्मरत्न न पाता तो क्या दशा होती? धन-दौलत के संचय-संग्रह और सामाजिक पद-प्रतिष्ठा की होड़-दौड़ में ही जीवन खो देता। धर्म की ओर झुकाव होता भी तो किसी संप्रदाय की बेड़ियों को ही आभूषण माने रहता। परायी अनुभूतियों के गर्व-गुमान में ही जीवन बिता देता। सत्य-धर्म की प्रत्यक्षानुभूति वाला यह सम्यक-दर्शन कहां उपलब्ध होता? कल्पनाओं को ही सम्यक-दर्शन मानकर संतुष्ट हो लेता। यथाभूत दर्शन द्वारा सम्यक ज्ञान कहां उपलब्ध होता? बौद्धिक ऊहापोह को ही सम्यक ज्ञान मानकर जीवन खो देता। कर्मकांड, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन अथवा स्वानुभूति-विहीन मत-मतांतरीय दार्शनिक मान्यताओं की जकड़न में अनमोल मनुष्य जीवन गँवा देता। आपने यह अनुत्तर-अनुपम धर्मदान देकर मानव-जीवन सफल कर दिया गुरुदेव!

सचमुच, अनुत्तर-अनुपम ही है यह धर्म-साधना! कितनी ऋजु, कितनी स्पष्ट, कितनी वैज्ञानिक, कितनी मांगलिक! बंधन से मुक्ति की ओर ले जाने वाली, माया-मरीचिका से निर्भ्रांति की ओर ले जाने वाली! भासमान प्रकट सत्य से परमसत्य की ओर ले जाने वाली! ऐसी अनमोल निधि की निर्मलता अपने शुद्ध-रूप में कायम रहे, आज के इस पुण्य-दिवस पर यही शिव-संकल्प है। कहीं किसी प्रकार के सम्मिश्रण की भूल का हिमालय जैसा बड़ा अपराध न हो जाय! यह अनमोल निधि अपने निष्कलुष रूप में कायम रहे और इसके अभ्यास द्वारा जन-जन की मुक्ति के लिए अमृत का द्वार खुले, इसी में आप का सही पूजन-वंदन, आदर-सम्मान समाया हुआ है।

विनीत धर्मपुत्र,
सत्यनारायण गोयन्का

(१९ जनवरी, १९७१ सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि एवं गुरुदेव श्री गोयन्काजी की जन्म-तिथि- ३० जनवरी, १९२४ पर -- विपश्यना वर्ष ४२ अंक १२ से साभार)

हम भी कृतज्ञ हैं!

उपरोक्त उद्‌गार हमारे गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के, उनके गुरुदेव और हमारे दादा-गुरु सयाजी ऊ बा खिन के प्रति

श्रद्धांजलि समर्पण हेतु है। उनकी पुण्य-तिथि १९ जनवरी को और गुरुजी की जन्म-तिथि ३० जनवरी को आती है। पूज्य गुरुजी की श्रद्धांजलि और कृतज्ञता को आगे बढ़ाते हुए आज हम उनकी जन्म-तिथि पर नतमस्तक होकर कहना चाहेंगे--

गुरुदेव! आप की असीम करुणा के कारण ही हम विपश्यना रूपी अमृत चख पाये हैं। हमें महसूस होता है मानो आपने हमारे लिए ही ब्रह्मदेश में जन्म लिया और भौतिक जगत की उच्चतम उपलब्धियों का त्याग कर अपना जीवन शुद्ध धर्म को समर्पित किया। हमारे लिए ही अपनी अत्यंत प्रिय जन्मभूमि त्याग कर भारत को कर्मभूमि बनाया। अनेक कष्टों को सहन कर यहां शुद्ध धर्म की ज्योति जलायी, इसे अनेकों तक पहुँचा कर उनके जन्म-जन्म का अंधेरा दूर किया। हमारे लिए ही अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी धर्म की मशाल थामे रह कर आदर्श बने और अंतिम क्षणों तक धर्मसेवा जारी रखी। आपने २५० से अधिक शिविर लिये, जिनमें हर रोज न केवल सूचनाएं बल्कि प्रवचन भी दिये। कितनी ही बार धर्म की बातें दोहराई। ४०० से अधिक विपश्यना के प्रेरक प्रवचन दिये और कितनी मुश्किलों को झेलते हुए १८० से अधिक विपश्यना केंद्र बनाने की प्रेरणा दी, जहां लाखों लोग अपनी जन्मों की प्यास बुझाते हैं और बुझाते रहेंगे। -- सचमुच गुरुदेव! आपने हमारे लिए ही जन्म लिया और हमारे लिए ही जिये। आपके इस असीम उपकार का ऋण हम कभी नहीं चुका सकेंगे। आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं-- इसलिए हम यही कहेंगे--

---- रोम-रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय!..

समस्त विपश्यी साधकगण.

गुरुदेव श्री गोयन्काजी की जन्म-जयंती

सयाजी ऊ बा खिन के प्रति पूज्य गुरुजी की भावभीनी कृतज्ञता एवं श्रद्धांजलि की भांति उनकी स्वयं की जन्म-जयंती (३० जनवरी, १९२४) के शुभ अवसर पर हम भी इसी प्रकार अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके शिव-संकल्पों को अक्षुण्ण बनाये रखने का संकल्प करें, धर्म का जीवन जीने के लिए साधना के अभ्यास को नियमित करें, अपने आचरण को पवित्र रखें और वाद-विवादों से दूर रह कर शुद्ध धर्म का प्रतिपादन करते रहें। यह विवरण जान कर मन प्रसन्न हुआ कि **वर्ष २०१३** में दस दिन के विश्व भर में **कुल २५०० शिविर** लगे और उनसे **कुल १५०,०००** साधिका-साधक लाभान्वित हुए। सभी साधक-साधिकाएं धर्म में पकते रहें! इसी में सब का मंगल-कल्याण समाया हुआ है।

साशिष,
इलायचीदेवी गोयन्का.

इतिपि सो भगवा लोकविदू

-- वे भगवान लोकविदू (सारे लोकों के जानकार) हैं।

लोकं विदति जानातीति लोकविदू--

जिसे लोक विदित हों, जो लोकों को जानता हो, वह लोकविदू।

कितने हैं लोक?

चार अधोगति के लोक- निरय, असुर, प्रेत, तिर्यक(पशु-पक्षी)।

एक मनुष्यलोक।

छः देवलोक- चातुर्महाराजिक, त्रायस्त्रिंश, याम, तुषित, निर्माणरति, परनिर्मित वशवर्ती।

सोलह रूप ब्रह्मलोक- ब्रह्मपारिषद, ब्रह्मपुरोहित, महाब्रह्मा, परित्ताभ, अप्रमाणाभ, आभास्वर, परित्रशुभ, अप्रमाण शुभ, शुभकृत्स्न, बृहत्फल, अविहा, अतप्य, सुदर्श, सुदर्शी, असंज्ञसत्ता, अकनिष्ठक।

चार अरूप ब्रह्मलोक- आकाशानन्त्यायतन, विज्ञानानन्त्यायतन, आकिञ्चन्यायतन, नैवसंज्ञानासंज्ञायतन।

इस प्रकार लोक इकतीस होते हैं। इनमें से पहले ग्यारह कामभोग के लोक हैं। ब्रह्मलोक ब्रह्माचरण के लोक हैं, जहां कामभोग नहीं होता। रूप ब्रह्मलोक में रूप और नाम दोनों की विद्यमानता होती है, परंतु अरूप ब्रह्मलोक में रूप नहीं होता, केवल नाम होता है। आज रूप शब्द सौंदर्य अथवा आकृति के अर्थ में रूढ़ हो गया है, परंतु उन दिनों की भाषा में रूप भौतिक पदार्थ को भी कहते थे। आज नाम का अर्थ केवल नामकरण रह गया है जिसका प्रयोग किसी को पुकारने, पहचानने के लिए किया जाता है, परंतु उन दिनों की भाषा में नाम चित्त को भी कहते थे। मनुष्य और पशुलोक में ठोस भौतिक शरीर होता है, परंतु अधोगति के कुछ लोकों में और देव व ब्रह्मलोक के प्राणियों के शरीर ठोस नहीं होते, वायव्य होते हैं, परंतु होते हैं भौतिक ही। केवल अरूप ब्रह्मलोक के प्राणी भौतिक शरीरधारी नहीं होते, उनका शरीर सूक्ष्म वायव्य भी नहीं होता। वे केवल नाममय यानी चित्तमय प्राणी होते हैं। इसी प्रकार असंज्ञसत्ता रूप ब्रह्मलोक में रूपमय प्राणी होते हैं।

एक अन्य गणना में एक कामलोक, दूसरा रूप ब्रह्मलोक और तीसरा अरूप ब्रह्मलोक- यों तीन लोक कहे जाते हैं।

एक अन्य गणना के अनुसार सारा विश्व जिस शून्य व्योम में स्थित है, उसे ओकासलोक, उसमें चूंकि प्राणी विद्यमान हैं, अतः वही सत्त (सत्त्व) लोक और उसमें संस्कारों की तरंगें समायी हुई हैं, अतः सङ्खारलोक- यों तीन लोक कहे जाते हैं।

सामान्यतया मनुष्यलोक को इहलोक कहते हैं और अन्य सभी को परलोक कहते हैं। साधना के क्षेत्र में नाम और रूप के सकल क्षेत्र को लोक कहा गया है। इसमें सभी इकतीस लोक सम्मिलित हैं।

गणना भले किसी प्रकार से करें, इन सारे लोकों के बारे में जिसे संपूर्ण सच्चाई विदित है, वही लोकविदू कहलाता है। इनके बारे में पूरी जानकारी यथार्थतः उसे ही हो सकती है, जो इन इकतीस लोकों का अनुसंधान पूरा करके इनके परे लोकातीत निर्वाण का साक्षात्कार कर ले यानी **लोकन्तगू** हो जाय। लोकन्तगू हो जाता है, तो ही सही माने में लोकविदू होता है, अन्यथा भ्रम- भ्रांतियों में ही उलझा रहता है।

लोकों के पार कैसे जायँ?

प्राचीन समय में रोहिताश्व नाम का एक ऋषि था। वह मर कर देवलोक में उत्पन्न हुआ। भगवान के जीवन काल में अनेक देव, ब्रह्मा भगवान से मिलने आते थे और उनसे धर्म संबंधी प्रश्न करते थे। एक समय भगवान अनाथपिंडिक के जेतवनाराम में विहार कर रहे थे, तब रोहिताश्व देव रात के समय सारे जेतवन को अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हुए भगवान से मिलने आया। उसने भगवान से प्रश्न किया कि क्या सारे लोकों के परे की उस अवस्था तक चल-चल कर पहुँचा जा सकता है, जहां न जन्म है न मृत्यु, न च्युति है न उत्पत्ति?

भगवान ने कहा- नहीं, चल-चल कर उस अवस्था तक नहीं पहुँचा जा सकता; यद्यपि मुक्ति के लिए उस अवस्था तक पहुँचना भी अत्यंत अनिवार्य है।

रोहिताश्व देवता यह सुन कर प्रसन्न हुआ, क्योंकि अपने मनुष्य-जीवन में उसने योगबल से सिद्धियां प्राप्त की थीं और उन सिद्धियों के आधार पर तीव्र गति से चलता हुआ लोकों से परे की अवस्था तक पहुँचने के निष्फल प्रयास में अपना सारा जीवन बिता चुका था। तब भगवान ने समझाया-

इमस्मिंयेव ब्याममत्ते कळेवरे ससञ्ञिम्हि समनके-

- इस व्याम भर लंबे यानी साढ़े तीन हाथ के संज्ञायुक्त शरीर में- **लोकञ्च पञ्ञापेमि, लोकसमुदयञ्च, लोकनिरोधञ्च, लोकनिरोधगामिनिञ्च पटिपदन्ति।** *(अ० नि० १.४.४५, रोहितस्ससुत्त)*

– मैं लोक को प्रज्ञापित करता हूं, लोक-समुदय को, लोक-निरोध को और लोक-निरोधगामिनी प्रतिपदा को भी।

भगवान इसीलिए उनका प्रज्ञापन कर सकते थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं लोकोत्तर अवस्था प्राप्त की थी। एक अन्य प्रसंग में भगवान ने कहा –

भिक्षुओ, तथागत द्वारा लोक जान लिया गया है। तथागत लोक से मुक्त हैं। भिक्षुओ, तथागत द्वारा लोकसमुदय यानी लोक की उत्पत्ति जान ली गयी है। तथागत की लोकोत्पत्ति प्रहीण हो गयी है, समाप्त हो गयी है।

भिक्षुओ, तथागत द्वारा लोक-निरोध जान लिया गया है, लोक-निरोध का साक्षात्कार हो गया है, लोक-निरोधगामिनी प्रतिपदा जान ली गयी है तथा लोक-निरोधगामिनी प्रतिपदा भावित कर ली गयी है।

सारे लोकों से परे की अवस्था प्राप्त करने के लिए, सारे लोकों का परिपूर्ण ज्ञान यानी परिज्ञान, अभिज्ञान होना आवश्यक है। लौकिक क्षेत्र के परे की अवस्था वह व्यक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है जिसने अभी समस्त लौकिक परिधि की पूरी-पूरी, यथाभूत जानकारी प्राप्त नहीं की है। अनुभूति के स्तर पर ऐसी जानकारी प्राप्त कर लेने पर ही कोई व्यक्ति सब लोकों से विमुक्त हो पाता है। तभी उनसे अलिप्त हो पाता है। तभी कहा गया –

सब्बं लोकं अभिञ्ञाय, सब्बं लोके यथातथं। ....

– सारे लोक को अभिज्ञान से जान कर, सारे लोक को यथा-तथ्य जान कर, सारे लोक से निर्बंध, सारे लोक से अलिप्त, जो व्यक्ति समस्त लोकप्रपंच को स्वयं अनुभूतियों से जान कर, उससे विमुक्त हो गया है, निर्लिप्त हो गया है, वही सही माने में लोकविदू है। वही सर्वजित है।

स वे सब्बाभिभू धीरो, सब्बगन्थप्पमोचनो।
फुट्ठस्स परमा सन्ति, निब्बानं अकुतोभयं॥

(अ० नि० १.४.२३, लोकसुत्त)

– वह धीर पुरुष सबको अभिभूत कर लेने वाला है, वह सब ग्रंथियों से विमुक्त है, उसने निर्वाणिक परम शांति प्राप्त कर ली है और वह भय-मुक्त हो गया है।

ऐसे लोकविदू को लोक के बारे में और लोक से विमुक्त होने के बारे में क्या भय और क्या संशय रह सकता है? परंतु यह होता तभी है, जब लोक के अंतिम छोर को जान कर उसके आगे निकल जाय; समस्त लौकिक क्षेत्र के परे लोकातीत निर्वाण का स्वयं साक्षात्कार कर ले।

तस्मा हवे लोकविदू सुमेधो, लोकन्तगू वुसितब्रह्मचरियो।
लोकस्स अन्तं समितावि ञत्वा, नासीसती लोकमिमं परञ्चाति॥

(अ० नि० १.४.४५, रोहितस्ससुत्त)

– इसलिए जो लोकविदू है, सुप्रज्ञ है, लोक के अंत को जानने वाला है, जिसने ब्रह्माचरण पूरा कर लिया है, (वह) समता के आधार पर लोक का अंत जान कर, इस लोक या परलोक में कहीं आसक्त नहीं होता।

सचमुच जो सारे लोक-प्रपंच को जान जाता है, वह लोक के प्रति आसक्त नहीं हो सकता। कोई व्यक्ति लोकविदू तभी होता है जबकि वह लोक के स्वभाव को जान जाता है, लोक की उत्पत्ति को जान जाता है, लोक के निरोध को जान जाता है, लोक निरोध के उपाय को जान जाता है। इन चारों को वह अपने शरीर के भीतर ही जान पाता है।...

(विश्व विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का द्वारा लिखित पुस्तक 'तिपिटक में सम्यक संबुद्ध' के भाग २/४ से साभार) ------

केंद्र संबंधी सूचनाएं

'धम्म कांची' कांचीपुरम्, तमिलनाडु

कांचीपुरम् के धम्म गृह का नाम **'धम्म कांची'** रखा गया है। यहां पर मात्र १, २ या ३ दिवसीय शिविर होंगे तथा मिनी आनापान के अभ्यास के साथ-साथ विपश्यना संबंधी साहित्य एवं भावी शिविर कार्यक्रमों की जानकारी दी जायगी। संपर्क ईमेल-- kanch.dhamma@gmail.com

धम्म पीठ, अहमदाबाद

यहां ७८ नये शून्यागारों के निर्माण का कार्य आरंभ हो गया ताकि सभी साधकों को तपने के लिए शून्यागार उपलब्ध हो सके। १०० साधकों के निवास आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। शून्यागार निर्माण के पुण्यार्जन के इच्छुक व्यक्ति का बैंक व्यवहार-- 'गुर्जर विपश्यना केंद्र', HDFC Bank a/c. 0069762000 0060, IFSC code- HDFC0000069 उपलब्ध है। कृपया अपना पूरा नाम-पता लिखते हुए धम्मपीठ के पते पर संपर्क करें।

धम्मचक्क विपश्यना ध्यान केंद्र, सारनाथ

यहां ५० शून्यागार वाले पगोडा का निर्माणकार्य आरंभ हो गया है। पुण्यार्जन के इच्छुक व्यक्ति का बैंक व्यवहार--'धम्मचक्क विपश्यना ध्यान केंद्र', Canara Bank a/c. 1191101014796, IFSCcode- CNRB0001191 उपलब्ध है। कृपया पूरा नाम-पता लिखते हुए केंद्र के पते पर संपर्क करें।

धम्मपालि विपश्यना केंद्र, गुजरात

धम्मपालि, पालिताना विपश्यना केंद्र में, जो भावनगर के पास गुजरात में निर्माणाधीन है, लगभग ४८ साधकों के निवास आदि की सुविधा हो गयी है और अभी अनेक महत्त्वपूर्ण भवन बनने शेष हैं। यहां १४ दिसंबर, २०१४ को पहला एक दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। अधिक जानकारी और पुण्यार्जन के इच्छुक संपर्क करें-- भावनगर विपश्यना केंद्र, द्वारा श्री प्रफुलभाई एवं गीताबेन मेहता, ४०१, 'आराधना', मेघानी सर्कल, भावनगर. फोन नं.: ९१-९४२७५-६०५९४, या श्री अनिल शाह, ०९४२७२-३२१४५. ई-मेलः nitesh@kothariworld.com; for **banking:** 'Bhavnagar Vipashyana Centre' Kotak Mahindra Bank, Bank A/c.6411183455, IFSC Code: KKBK0000891. ➔

अतिरिक्त उत्तरदायित्व भिक्षु आचार्य

1. Ven. Bhikkhu Badullawala Seelaratana, Sri Lanka- समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य की सेवा, श्रीलंका

नये उत्तरदायित्व आचार्य

१. श्री एम. ए. सुब्रमनियम, केंद्र आचार्य की सेवा- धम्म अरुणाचल, तमिलनाडु

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Dong Hwang Lee & Mrs. Jeong Soo Lee, South Korea
3-4. Mr. Itamar Soffer & Mrs. Jung Im Jung, South Korea

नव नियुक्तियां सहायक आचार्य

१-२. श्री देवीचरण एवं श्रीमती उमरावती कुशवाहा, गाजीपुर
३. श्री महेश वाळवेकर, कोल्हापुर
४. श्री गोविंदभाई लेवा, अहमदाबाद
५. श्री विपिन प्रकाश मंगल, अहमदाबाद
६. श्रीमती उर्वशी पटेल, अहमदाबाद
७. श्री नोरबू भूटिया, सिक्किम
८. कु. चंदा आशर, मुंबई
९. श्री विश्व मित्तर मुसाफिर, हमीरपुर
१०. श्री राम मंगल सिंह, फतेहपुर
११. श्रीमती नीरा कपूर, दिल्ली
१२. कु. संदीप कौर विर्क, करनाल
13. Mrs.Narin PO, Combodia
14. Mrs. Nary POC, Combodia

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्रीमती आशा वानखेडे, यवतमाल
२. श्री हर्षनंद इंगोले, यवतमाल
३. श्रीमती प्रभा तलवारे, यवतमाल
४. डॉ. राजकुमार भगत, यवतमाल
५. श्री ब्रह्मपाल चौरे, भंडारा
६. श्री कुलदीप बागडे, भंडारा
७. श्री सुरेश मेश्राम, भंडारा
८. श्री दादाराव तायडे, अकोला
९. श्री जनार्दन भगत, वाशिम
१०. श्री सम्राट लोखंडे, वर्धा
११. श्रीमती सुनीता नागदिवे, अमरावती
१२. श्रीमती वर्षा गजभिये, नागपुर
१३. श्रीमती रसिल्काबेन वाघेला, जामनगर
१४. श्रीमती ऊषा भोसले, खारघर
१५. श्रीमती सरस्वती रामदास, खारघर
१६. श्री रमेश काटे, रायगढ़
17. Ms Puttiporn Yongnate, Thailand
18. Mrs Emika Angkanasirikul, Thailand
19. Mrs. Kanoknipa Titakarnasirikul, Thailand

Registered No. NSK/235/2015-2017

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2015-2017

धम्म भुबनेश्वर, उड़ीसा

यहां फिलहाल रसोईघर, भोजनालय, शौचालय आदि का काम चल रहा है। धम्महॉल, आचार्य निवास और पुरुष-महिला निवास / डॉरमिटरी आदि आरंभ करना है। पुण्यार्जन के इच्छुक संपर्क करें-- श्री सी. आर. कर, मो. ९४३७१३१०१९, ०६७४-२३५४२०७ या श्री डी. एल. दास- मो. ९४३८०१२१६६, ईमेल- vipassanabbsr@gmail.com; SBI a/c 32758805428, for VIPASSANA TRUST BHUBANESWAR, IFSC code- SBIN0012018.

पालि प्रशिक्षण कार्यक्रम- २०१५, विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल विपश्यना पगोडा, मुंबई

⇨ पालि पढ़ना-लिखना सीखना (-- बरमी, रोमन एवं देवनागरी में) -- १० से १९ मई;
⇨ पालि-अंग्रेजी सघन निवासीय पाठ्यक्रम -- २५ मई से ९ अगस्त;
⇨ अनुवाद-कार्य के लिए कार्यशाला -- १० से १७ अगस्त;
⇨ अशोक के शिलालेख एवं बरमी लिपि कार्यशाला -- १ से ५ अक्टूबर;
⇨ उच्च पालि-व्याकरण कार्यशाला -- ३ से १४ नवंबर;
⇨ शोध-प्रणाली पर कार्यशाला -- १५ ले १९ नवंबर;

इन कार्यक्रमों में भाग लेने की पात्रता (योग्यता)--

अ) जिन्होंने कम-से-कम **तीन** १०-दिवसीय एवं **एक** सतिपट्ठान शिविर किया हो।
ब) स्नातक डिग्री या १५ वर्ष तक स्कूली पाठ्यक्रम पूरा किया हो।
स) अनुवाद और पालि-व्याकरण के लिए-- जिन्होंने वि.वि.वि. द्वारा संचालित निवासीय पालि-पाठ्यक्रम पूरा किया हो अथवा पालि में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की हो।

विन्यास ने निम्न विषयों पर शोध का आयोजन किया है--

१. संत वाणी में विपश्यना; २. तिपिटक में आयुर्वेदिक तत्त्व;
३. विपश्यना से बदलाव-- तब और अब;

यदि किसी ने इन विषयों पर कुछ काम किया हो तो उनका स्वागत है।
संपर्क-- ईमेल- mumbai@vridhamma.org; फोन- +91-22-33747560.

आवश्यकता है

ग्लोबल पगोडा परिसर की सुरक्षा हेतु एक योग्य अनुभवी अधिकारी की आवश्यकता है। आर्मी के रिटायर्ड व्यक्ति को एवं जिसने साधना की हो अथवा इसमें रुचि रखता हो उसे प्राथमिकता दी जायगी। कृपया अपने बायोडाटा और पहचान-पत्र के साथ संपर्क करें-- श्री आर. के. अग्रवाल, मो. 09324216214, ईमेल- rkagarwal.vri@globalpagoda.org

---

अस्थि अवशेष सूचना कक्ष

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, बोरीवली के परिसर में एक सूचना कक्ष भगवान बुद्ध की शरीर-धातुओं (अस्थि अवशेष) (Relics) के वर्तमान स्थलों की सूचना के लिए चिह्नित किया गया है ताकि आगंतुकों को यह जानकारी मिल सके कि भगवान बुद्ध की शरीर-धातुएं कहां-कहां सुरक्षित रखी हुई हैं। इस **कक्ष का उद्घाटन** १८ जनवरी को किया गया। ----

आगामी बुद्ध पूर्णमा के शुभ अवसर पर एक-दिवसीय महाशिविर

4 मई 2015 को 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' में पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर होगा। शिविर-समयः प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक. 3 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपोसुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170 022-337475-01/43/44- Extn. 9, (**फोन बुकिंग : 11** से **5** बजे तक, प्रतिदिन) **Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org**

दोहे धर्म के

शुद्ध धर्म का शांति पथ, संप्रदाय से दूर।
शुद्ध धर्म की साधना, मंगल से भरपूर॥

सत्य धर्म को, कल्पना दूषित देय बनाय।
एक बूंद कांजी गिरे, मन भर पय फट जाय॥

रूप शब्द रस गंध में, सतत सघनता होय।
विपश्यना से बींध लें, तो ही विघटन होय॥

जहां जहां है सघनता, वहां मोह ही होय।
माया का विभ्रम चले, अहं प्रतिष्ठित होय॥

धर्म सरित निर्मल रहे, मैल न मिश्रित होय।
जन जन का होवे भला, जन जन मंगल होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

संतां की संगत सुखद, दुखद दुस्ट की होय।
वंदन गुरुजन को सुखद, मंगलकारी होय॥

सतगुरु की संगत मिली, मिल्यो धरम को सार।
संप्रदाय कै बोझ को, उतर्‌यो सिर स्यूं भार॥

सतगुरु की किरपा हुई, उबरत लगी न देर।
दुख दालद सारा मिट्‌या, मिल्यो रतन को ढेर॥

जदि सतगुरु तू राजपथ, देतो नहीं दिखाय।
तो जीवन भर भटकतो, आंधी गलियां मांय॥

अहो भाग्य! गुरुदेव जू, प्रग्या दई जगाय।
दरसन बाद विबाद की, जकड़न दई छुड़ाय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2558, माघ पूर्णिमा, 3 फरवरी, 2015**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2015-2017**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2015-2017
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org